

भारतीय गृहिणी असन्तुष्ट क्यों?



निर्मला जैन*

उच्च कोटि के प्रायः सभी दार्शनिकों तथा साहित्यकारों ने स्त्री को पुरुष से महान माना है। प्रकृति ने भी अपना सबसे महत्वपूर्ण व कष्टसाध्य कार्य प्रजनन का दायित्व स्त्री को सौंपा है, पर कहने को स्त्री लूँची ही हो, वास्तव में उसकी दशा हीन है। उसके सेवा भाव, वात्सल्य, त्याग आदि प्रकृति प्रदत्त गुणों को पुरुष अपना अधिकार समझता है। युगों से वह उस पर अत्याचार करता आया है। घर की मर्यादा रखने के लिए वह चुप रहती है अन्यथा मानसिक असंतोष के सतत् प्रहारों से उसका जीवन जर्जरित रहता है। मन की पीड़ा स्वास्थ्य को भी चौपट कर देती है और वह नीरस जीवन का भार ढोती रहती है।

इस असंतोष के कुछ मुख्य कारण निम्नलिखित हो सकते हैं:

पति की उपेक्षा

स्त्री स्वभाव से ही भावुक होती है और प्रेम और सम्मान उसका जीवन होता है। कितने अरमान लेकर वह दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करती है। आरम्भ में कुछ समय तक उसकी भावुकता को प्रश्रय मिलता भी है, पर कुछ ही समय में आरम्भिक दिनों का प्रेम न जाने कहाँ उड़ जाता है, जिससे स्त्री के अन्तर-जगत में हलचल मच जाती है। पुरुष प्रायः इस हलचल से अनभिज्ञ रहता है और ऐसा मधुर रस-रिक्त जीवन स्त्री को एक बोझ प्रतीत होता है। कई लोग समझते हैं कि घर में असंतुष्टि का भाव धन की कमी से होता है, पर सुख समृद्धि से पूर्ण घरों में भी स्त्रियाँ दुःखी सी रहती हैं और इसका कारण पति के प्रेम भाव का अभाव हो सकता है।

उचित मूल्यांकन का अभाव

जहाँ स्त्रियाँ बाहर काम नहीं करतीं, पुरुष काम कर लाता है, वहाँ स्त्री सुचारु रूप से गृहस्थी चला कर उसका परिश्रम सफल करती है। पर आश्चर्य की बात है कि गृहस्थी कार्य सरल तथा निम्न कोटि का माना जाता है। बच्चों को जन्म देकर उनका लालन-पालन तथा गृहस्थी के अन्य सारे काम स्त्री मनोयोगपूर्वक करती है पर इन कार्यों को अत्यंत साधारण माना जाता है। बहुत बार स्त्रियाँ स्वयं हीन भावना से ग्रस्त रहती हैं। धनोपार्जन का उद्देश्य भी तो घर गृहस्थी चलाना है। देखा जाए तो घर में सैंकड़ों काम होते हैं पर यदि कोई न करना चाहे तो केवल आवश्यक कार्य करके मौज करता रह सकता है। उदाहरण के लिए बच्चों का पालन एक कठिन कार्य है और उनकी उम्र बढ़ने के साथ नई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। कई स्त्रियाँ बच्चों का पेट भरना तथा तन ढाँकना ही पर्याप्त मानती हैं, पर जागृत माताएँ अपने बच्चों को सुयोग्य नागरिक बनाने के लिए श्रम करती हैं, जिसका महत्व आंका जाना चाहिए। पुरुष की कमाई का लाभ ही क्या है यदि उसे बच्चों की ओर से संतोष न हो और घर में सुख शांति न हो, और ये कार्य करती है उसकी पत्नी। उस गृहिणी का कार्य किसी दृष्टि से छोटा नहीं है।

* स्वतंत्र लेखिका

आर्थिक परवशता

इसे स्त्री की दुर्दशा का मुख्य कारण माना जा सकता है। मंहगाई के कारण निम्न और मध्यम वर्गीय पारिवारिक जीवन कलहपूर्ण रहते हैं। मंहगाई के साथ-साथ फैशन और प्रदर्शन की प्रवृत्ति अधिक धन की मांग करती है। इसके अतिरिक्त एक और कारण से भी स्त्री स्वावलंबिनी बनना चाहती है। मदोन्मत्त पति द्वारा पददलित होने पर वह सोचती है कि यदि आज मैं अपने पैरों पर खड़ी होती तो मेरा ऐसा अपमान न होता। वह देखती है कि नौकरी करने वाली बहिनें कितना सम्मानित जीवन व्यतीत कर रही हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि उनका जीवन भी सरल नहीं होता पर उन्हें अकारण अपमानित तो नहीं होना पड़ता है।

महत्वाकांक्षाओं का दमन

विवाह के पश्चात् आरम्भ के कुछ वर्षों में स्त्री अत्यंत व्यस्त रहती है पर इस बीच भी कभी-कभी उसकी दबी हुई महत्वाकांक्षा उभर कर उसे पीड़ित करती रहती है। ज्यों-ज्यों उसकी आयु बढ़ती है अपूर्ण महत्वाकांक्षा की पीड़ा उसे निराश करती रहती है। कार्य भार से दब कर अथवा परिवार की संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण उसके व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता।



टिप्पणी

प्रस्तुत लेख में लेखिका ने उस वर्ग की गृहिणी की व्यथा व्यक्त की है, जो प्रशिक्षित होते हुए भी नौकरी न कर अपनी परिस्थितियों से समझौता करके एक गृहिणी की भूमिका अपनाती है। वह ऐसा क्यों करती है, उन कारणों पर न जाकर उसके असंतोष के कारणों का वर्णन यहाँ मिलता है, परन्तु यदि असंतोष के कारण ज्ञात हैं तो उनके निवारण की ओर भी प्रयास होना चाहिए।

प्रेम का स्वरूप विवाह के बाद धीरे-धीरे बदलाव की ओर जाता है। नयापन समाप्त होने पर दिन-प्रतिदिन की समस्याओं का सिर उठाना भी स्वाभाविक है। विवाह के उपरान्त राजा-रानी सुख से रहने लगे, ये फिल्मों में होता है। तो इस अपरिहार्य/अनिवार्य परिवर्तन के साथ अपनी अपेक्षाओं को भी पुनः स्थापित करना आवश्यक है। पति यदि पहले जैसा व्यवहार नहीं रखता तो वह खुश रहने के लिए विकल्प ढूँढ लें। दिनभर घर और बच्चों की जिम्मेदारी पूरी होने पर समयानुसार व रुचिनुसार किसी हॉबी या किसी सामाजिक कार्य पर समय लगाएँ। यदि धनोपार्जन की भी आवश्यकता है तो अपनी पढ़ाई-लिखाई का उपयोग ट्यूशन देने या पत्रिकाओं में लेख आदि लिख कर करें। इससे घर में खोया हुआ सम्मान वापस आएगा और महत्वाकांक्षाओं को भी आयाम मिलेगा। अपनी तुलना काम काजी महिलाओं से न करते हुए अपने को हीन कभी न समझें और अपने द्वारा लिए हुए निर्णय या परिस्थितिवश स्थिति को सम्मान दें।

मैं ये कर सकती थी, या मेरा शोषण हो रहा है, सोच-सोच कर न कुद्रे और घर का वातावरण दूषित न करें।

समय पर निदान की ओर कदम न बढ़ाने पर अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जैसे कहीं ठोकर लगने पर उसी स्थान पर बैठे अपनी चोट को सहलाते रहने के बजाय उठकर खड़े होकर पुनः चलना आवश्यक है, उसी प्रकार अपनी स्थिति को सुधारने का स्वयंभावी प्रयास जीवन को नीरस और उपेक्षित बनने से बचने में सहायक सिद्ध होगा।



डॉ. प्राची बागला